पाठ ०४ : ऐसी भी बातें होती हैं (लता मंगेशकर से साक्षात्कार)

खंड १: प्रस्तावना, पारिवारिक पृष्ठभूमि और पिता की अनुशासित स्मृतियाँ

कठिन शब्दार्थ

- **अप्रतिम:** बेजोड़, अनुपम जिसकी कोई उपमा न हो
- **आकंठ:** कंठ तक, पूरी तरह से डूबा हुआ
- **दुर्लभ:** जो बहुत कठिनाई से प्राप्त हो
- **रागदारी:** शास्त्रीय संगीत में ठीक ढंग से राग गाने की क्रिया या पद्धति
- **षडज (सा):** संगीत के सात स्वरों में से पहला मूंछ स्वर

सरल व्याख्या

इस अंश में लेखक यतींद्र मिश्र संगीत की महान विभूति 'भारत रत्न' लता मंगेशकर जी के जीवन और कला यात्रा को पाठकों के सम्मुख लाने के लिए साक्षात्कार विधा का उपयोग करते हैं। लता जी अत्यंत विनम्रतापूर्वक अपने करोड़ों प्रशंसकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए संवाद की शुरुआत करती हैं। लेखक जब उनके पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर जी की स्मृतियों के विषय में पूछते हैं, तो लता जी अपने बचपन के पारिवारिक अनुशासन का एक सुंदर संस्मरण साझा करती हैं। उनके पिता बच्चों की शरारतों पर कभी चिल्लाते या डाँटते नहीं थे, बल्कि केवल गंभीरता से देख लेते थे। उनका यह मूक और अनुशासित गुस्सा ही बच्चों को उनकी भूल का अहसास कराने के लिए पर्याप्त होता था।

लता जी बताती हैं कि उनके पिता बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, जो अपनी ड्रामा कंपनी के नाटकों में पाँच-पाँच अंकों वाली लंबी रागदारी का गायन करते थे। वे संगीत में इतने पारंगत थे कि गाते समय किसी भी सुर को 'सा' (षडज) बनाकर राग के स्वभाव को बदल देते थे और पुनः मूल राग में वापस लौट आते थे। उन्होंने मराठी रंगमंच पर पहली बार कर्नाटक और पंजाब के संगीत का समावेश करके एक अभूतपूर्व प्रयोग किया था। घर पर जब नाटक नहीं होते थे, तब शास्त्रीय संगीत की महफ़िलें सजती थीं, जिसके रिकॉर्ड्स तत्कालीन प्रतिष्ठित कंपनियों जैसे एच।एम।वी। और मेगाफोन द्वारा जारी किए गए थे।

खंड २: जीवन के नैतिक मूल्य, स्वाभिमान और अभिनय से अरुचि

कठिन शब्दार्थ

- **स्वाभिमान:** आत्मसम्मान, अपनी प्रतिष्ठा का उचित बोध
- **सदेह:** शरीर के साथ, भौतिक रूप में
- **अनुयायी:** पीछे चलने वाला, अनुगामी या शिष्य
- **मार्फ़त:** माध्यम, किसी के द्वारा

सरल व्याख्या

लता जी स्पष्ट करती हैं कि संगीत की शिक्षा के साथ-साथ उनके पिता ने उन्हें जीवन का सबसे बड़ा संस्कार 'स्वाभिमान से जीना' सिखाया था। उन्होंने सिखाया था कि यदि कोई बात सत्य और न्यायसंगत है, तो उस पर दृढ़ता से खड़े रहो और किसी के आगे हाथ पसारने या झुकने की आवश्यकता नहीं है। पिता के असमय निधन के बाद परिवार

पर आए आर्थिक संकट और कठिन दिनों में भी लता जी और उनके भाई-बहनों ने इसी स्वाभिमानी संस्कार के बल पर गरिमापूर्ण जीवन जिया।

बचपन के मनोरंजन के विषय में वे बताती हैं कि उनके घर में पिता के कड़े अनुशासन के कारण केवल धार्मिक और देशभक्ति की फिल्में देखने की अनुमति थी। वे सब भाई-बहन चोरी-छिपे 'संत तुकाराम' जैसी धार्मिक फिल्मों की नकल उतारते थे, जिसमें लता जी गद्दों-तकियों का ऊँचा स्वर्ग बनाकर बैठती थीं और अन्य भाई-बहन उनके अनुयायी बनकर रोने का अभिनय करते थे। जब उनसे अभिनय के क्षेत्र के विषय में पूछा गया, तो उन्होंने बताया कि शुरुआत में उन्होंने छह-सात फिल्मों में अभिनय अवश्य किया था, परंतु उन्हें चेहरे पर मेकअप करना, कृत्रिम रूप से हँसना-रोना कभी रास नहीं आया। वे केवल छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा के कारण उनकी फिल्म के अंतिम दृश्य में दो पंक्तियाँ गाने के लिए कैमरे के सामने आई थीं।

खंड ३: कठिन कार्य परिस्थितियाँ, तकनीकी संक्रमण और त्योहारों के संस्मरण

कठिन शब्दार्थ

- **सबब:** कारण, हेतु
- **अलबत्ता:** निस्संदेह, निश्चित रूप से
- **सूत्रपात / आमद:** कार्य का आरंभ / आगमन
- **पार्श्वगायन:** पर्दे के पीछे से नेपथ्य में बैठकर किसी अभिनेता के लिए गाना
- **गुड़ि पड़वा:** महाराष्ट्र में मनाया जाने वाला नववर्ष का पारंपरिक त्योहार

सरल व्याख्या

अपने शुरुआती संघर्ष के दिनों को याद करते हुए लता जी बताती हैं कि उनके काम की परिस्थितियाँ अत्यधिक कठिन थीं। वे सुबह से रात तक एक स्टूडियो से दूसरे स्टूडियो के चक्कर काटती थीं। उनका एकमात्र लक्ष्य अपने परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करना था, जिसके कारण वे शारीरिक थकान की परवाह नहीं करती थीं। बचपन का एक सपना साझा करते हुए वे कहती हैं कि पंडित कुमार गंधर्व को मेडल लगाकर गाते देख उनके मन में भी बड़े होकर मेडल पाने की हसरत जागी थी।

लेखक जब समय के हेर-फेर (Time Machine) और संगीत के तकनीकी विकास पर प्रश्न करते हैं, तो लता जी पचास के दशक की रिकॉर्डिंग की चुनौतियों को समझाती हैं। 'महल' फिल्म के प्रसिद्ध गीत 'आएगा आने वाला' की रिकॉर्डिंग के समय हॉल में बहुत दूर से दबे पाँव चलकर माइक तक आना पड़ता था ताकि स्वर का उतार-चढ़ाव प्राकृतिक रूप से कैद हो सके। पुराने संगीतकारों ने सीमित साधनों में भी अद्भुत प्रयोग किए। पहनावे में सफेद रंग को प्राथमिकता देने वाली लता जी बताती हैं कि उनके घर में पारंपरिक रूप से होली, दशहरा, दिवाली और विशेषकर 'गुड़ि पड़वा' (राम आगमन का उत्सव) बड़ी धूमधाम से मनाया जाता था। वे शुरुआती दिनों में दिवाली के अवसर पर सुबह तड़के ही अपने वरिष्ठ संगीतकारों (जैसे नौशाद साहब, अनिल विश्वास) के घर मिठाई लेकर आशीर्वाद लेने जाती थीं।

खंड ४: कोरस गायिकाओं से संबंध, संगीत की असीम शक्ति और अमरता का दर्शन

कठिन शब्दार्थ

- **मंगलागौर:** महाराष्ट्र में विवाह के बाद नई बहू के स्वागत में औरतों द्वारा मनाया जाने वाला लोक-उत्सव
- **जनश्रुतियाँ:** लोक में प्रचलित कहानियाँ या अफ़वाहें
- **अप्रत्यशित:** जिसकी आशा न की गई हो, अचानक
- **अतिरेक:** आवश्यकता से अधिक, आधिक्य
- **वाजिब:** उचित, न्यायसंगत

सरल व्याख्या

लता जी अपने सह-कलाकारों और कोरस (समूह) में गाने वाली लड़कियों के साथ अपने संबंधों को पूरी तरह आत्मीय और पारिवारिक बताती हैं। पचास से अस्सी के दशक तक एक ही ग्रुप की लड़कियाँ (जैसे कविता, गांधारी, कल्याणी) सभी संगीतकारों के यहाँ गाती थीं। रिकॉर्डिंग के दौरान कुर्सियाँ न होने पर वे सब ज़मीन पर साथ बैठकर बातें करती थीं। महाराष्ट्र के लोक-रिवाजों की चर्चा करते हुए वे 'मंगलागौर' उत्सव का उल्लेख करती हैं, जहाँ स्त्रियाँ मुग्ध भाव से पारंपरिक गँवई अंदाज़ में लोकगीत गाती और नृत्य करती थीं, जो अब धीरे-धीरे लुप्त हो रहा है।
संगीत की अलौकिक शक्ति और प्राचीन मान्यताओं (जैसे तानसेन के दीपक राग से दीये जलना) पर विचार व्यक्त करते हुए वे कहती हैं कि संगीत में अप्रत्याशित रचने की असीम शक्ति अवश्य होती है। वे उस्ताद अली अकबर खाँ के सरोद वादन का एक मार्मिक प्रसंग सुनाती हैं, जहाँ अत्यधिक शुद्ध सुर के आघात के कारण सरोद का तार टूट गया था। साक्षात्कार के अंत में लेखक जब उनकी अमरता की बात करते हैं, तो लता जी एक दार्शनिक सत्य को सामने रखती हैं। वे कहती हैं कि मानव शरीर नश्वर है, उसे एक न एक दिन जाना ही है, परंतु मनुष्य के कर्म और उसका संगीत हमेशा जीवित रहते हैं। वे मराठी कहावत 'गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन' (गाँव बह जाता है पर नाम रह जाता है) के माध्यम से संतोष व्यक्त करती हैं कि वे अपने पिता के नाम को आगे बढ़ा सकीं।